बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय

बाँदा – २१०००१ (उ0प्र0)

Banda University of Agriculture & Technology, Banda- 210001 (U.P.)

मौसम आधारित कृषि सलाह

(Agro-Weather Advisory Bulletin No.: 153 /2026) **Year: 8th**

जिला: बाँदा	**जारी करने की तिथि: 02.05.2026**

क्रम सं	विभाग	सलाह
1-	**शाक-भाजी**	➢ अधिक तापमान के मद्दे नजर चौलाई, भिंडी, लोबिया, कुल्फा, बैगन, टमाटर, मिर्च तथा कद्दू वर्गीय फसलों में आवश्यक मृदा नमी बनाए रखें। इसके लिए काली पॉलीथिन अथवा सुखी घास की पलवार प्रयोग कर सकते हैं। ➢ आवश्यक मृदा नमी के अभाव एवं अधिक तापमान के कारण मिर्च, बैगन, टमाटर तथा कद्दू वर्गीय सब्जियों में पुष्प व फल-पतन हो सकता है। ➢ फसलों को थ्रिप्स तथा सफेद मक्खी जैसे चूसक कीड़ों के प्रकोप से सुरक्षित रखने के लिए उपयुक्त कीटनाशी का प्रयोग करें । ➢ वर्षा ऋतु में सब्जियों की खेती के लिए चुने गए खेत की गहरी जुताई कर दें जिससे कीट व्याधि व खर पतवार के बीज नष्ट हो जाएं।
2-	**शस्य-प्रबंधन एवं मृदा-प्रबंधन**	**शस्य.प्रबंधन** ➢ रबी फसल के उपज को अच्छी तरह साफ कर धूप में सुखाकर 12 प्रतिशत से कम नमी की दशा में भंडारित करना चाहिये। ➢ इस समय के तापमान को ध्यान में रखते हुये सभी फसलों में हल्की सिंचाई अवश्य करें। सिंचाई हमेशा शाम या सुबह के समय करना चाहिये। ➢ हरी खाद हेतु मूँग, सनई, ढ़ैचा की बुआई प्रथम सप्ताह में अवश्य पूर्ण करें। ➢ खाली खेत में ग्रीष्मकालीन जुताई अवश्य करें। ➢ आवश्यक होने पर मृदा समतलीकरण अवश्य कर लें। ➢ कृषक भाइयों को सलाह दी जाती है कि खेत में ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई अवश्य करें। ➢ गर्मी की जुताई पूर्ण कर खेत को खुला छोड़ दे ताकि कीट के अंडे–बच्चे रोगजनक एवं खरपतवार के बीज आदि नष्ट हों जायें। **मृदा.प्रबंधन** ➢ उद्यानिक फल वृक्षों में आवश्यकतानुसार सिंचाई उपरान्त पोषक तत्वों का प्रयोग करें। ➢ जो सब्जी फसलें अभी भी खेतों में है उनमें आवश्यकतानुसार पोषक तत्वों का प्रयोग करें। ➢ ग्रीष्मकालीन सब्जी फसलों की बुवाई/रोपाई में फास्फोरस एवं पोटाश का प्रयोग आधारीय उर्वरक के रूप में प्रयोग करें। एक तिहाई नत्रजन का भी प्रयोग करना उपयुक्त होगा।

		➢ मिट्टी परीक्षण हेतु मृदा नमूना एकत्र कर नजदीकी प्रयोगशाला में परीक्षण हेतु भेजें। ➢ ग्रीष्म कालीन मूंग की बुवाई में 20:60:20 कि0ग्रा0 प्रति हे0 की दर से नत्रजनः फास्फोरसः पोटाश का प्रयोग करें। इस हेतु 50 कि0ग्रा0 क।च एवं 13 कि0ग्रा0 डव्च प्रति एकड बुवाई के समय आधारीय उर्वरक के रूप में प्रयोग करना चाहिए।
3-	**पशुपालन प्रबंधन**	➢ इस माह में तापमान काफी बढ़ जाता है तथा मैदानी क्षेत्रों में धूलभरी ऑधियॉ व लू (गर्म हवा) इंसानों को ही नहीं अपितु पशु पक्षियों को भी प्रभावित करती है। इस कारण गर्मी से होने वाली बीमारियाँ पालतू पशुओं को भी प्रभावित करती है। गर्म मौसम में पशुओं की आहार ग्रहण करने की क्षमता कम हो जाती है। जिस कारण दुधारू पशुओं का उत्पादन भी कम हो जाता है इसके निदान के लिए पशुओं को भोजन पानी में भिगोकर देना चाहिए एवं हरे चारे की मात्रा बढ़ानी चाहिए जिससे पशुओं द्वारा भोजन की ग्राहयता बढ़ेगी। दुधारू पशुओं, नवजात व छोटे जानवरों एवं संकर नस्ल की गायों को दिन के समय में धूप में जाने व बॉधने से बचाना चाहिए तथा उनके बॉधने के स्थान में भी गर्म हवा (लू) से बचाव की व्यवस्था करनी चाहिए। गर्म मौसम में पशुओं के शरीर में लवणों की कमी हो जाती है जिससे बचाव के लिए खनिज लवण उपयुक्त मात्रा में भोजन के साथ मिलाकर देना चाहिए तथा साथ ही साथ भोजन में सभी अवयवों का सही एवं उपयुक्त मिश्रण होना चाहिए जिससे दुधारू पशुओं की दुग्ध उत्पादन क्षमता इस विपरीत मौसम में भी प्रभावित नहीं होगी।
4–	**कीट–प्रबंधन**	➢ मूँग/उर्द/भिण्डी/लोबिया आदि में पीत शिरा मोजैक/पत्ती मरोड़ विषाणु रोग के वाहक कीट के नियंत्रण हेतु थायोमेथोक्साम 25 प्रतिशत डब्ल्यू0 जी0 3 ग्राम को 10 लीटर अथवा फ्लोनीकॉमिड 50 डब्ल्यू जी 4 ग्राम को 10 लीटर पानी में घोलकर आवश्यकतानुसार 10–15 दिन के अन्तराल पर 2–3 छिड़काव करें। ➢ मूँग/उर्द में बालदार गिडार के नियंत्रण हेतु फसल की नियमित निगरानी करते रहना चाहिए। जैविक नियंत्रण हेतु बैसिलस थूरिनजिएन्सिस (बी0टी0) 1.0 किग्रा0 प्रति हे0 की दर से 400–500 ली0 पानी में घोलकर आवश्यकतानुसार 15 दिन के अन्तराल पर सायंकाल छिड़काव करना चाहिए अथवा एजाडिरैक्टिन (नीम आयल) 0.15 प्रतिशत ई0सी0 2.5 ली0 प्रति हे0 की दर से 600–700 ली0 पानी में घोलकर छिडकाव करना चाहिए। ➢ आम में भुनगा कीट व मिली बग की रोकथाम हेतु फ्लोनीकॉमिड 50 डब्ल्यू जी 4 ग्राम को 10 लीटर पानी अथवा बुप्रोफेजिन 25 प्रतिशत एस0सी0 2

		मिली0 प्रति लीटर पानी में घोलकर आवश्यकतानुसार 10–15 दिन के अन्तराल पर 2–3 छिड़काव करें। ➢ टमाटर में फल छेदक एवं बैंगन में कलंगी एवं फल बेधक कीट से बचाव हेतु ग्रसित फलों तथा प्रभावित कलंगी को इकट्ठा कर नष्ट कर दें। नियंत्रण हेतु फेरोमोन ट्रेप लगाकर वयस्क कीट पकड़ कर नष्ट कर देना चाहिए। नीम गिरी 4 प्रतिशत (40 ग्रा0 नीम गिरी का चूर्ण 1 ली0 पानी में) का घोल बनाकर 10 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करना चाहिए अथवा क्लोरेन्ट्रानिलीप्रोल कीटनाशी की 100 मिलीलीटर मात्रा को 250 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति एकड़ की दर से 10 दिन के अन्तराल पर आवश्यकतानुसार छिड़काव करना चाहिए। ➢ सब्जियों की फसलों में माईट की निगरानी करते रहें व आवश्यकता पड़ने पर घुलनशील गंधक का 3 ग्राम/लीटर अथवा स्पाइरोमेसिफेन 0.8 मिली/ली की दर से छिड़काव करें। ➢ कद्दू वर्गीय सब्जियों में फल मक्खी कीट के नियंत्रण हेतु क्षतिग्रस्त फलों को तोड़कर नष्ट कर देना चाहिए। एजाडिरैक्टिन 0.15 प्रतिशत 2.5 लीटर मात्रा को 500–600 लीटर पानी मे घोलकर प्रति हे0 की दर से आवश्यकतानुसार 10–15 दिन के अंतराल पर छिड़काव करना चाहिये। क्यू ल्योर + इथाईल एल्कोहल + मैलाथियान 50 प्रतिशत ई0सी0 के 4:6:1 के बने घोल में 5 ग 5 ग 1.5 मिमी0 के प्लाईवुड के टुकड़ों को 24 – 48 घंटा तक शोधित कर लगाने से लगभग 500 मी0 तक की फल मक्खी आकर्षित होती है। जिसे एकत्र करके नष्ट किया जा सकता है।
5.	**वानिकी प्रबंधन**	➢ गर्म मौसम को ध्यान में रखते हुए वानिकी पौधशाला के नर्सरी पौध की सुरक्षा एवं समुचित विकास हेतु क्रमषः छाया की उचित व्यवस्था तथा सायंकाल नर्सरी में नियमित सिंचाई करने की सलाह दी जाती है। ➢ किसानों को कृषि वानिकी के तहत वृक्षारोपण की योजना तैयार करने की सलाह दी जाती है जैसे उद्देश्य के अनुसार वृक्ष प्रजातियों का चयन, स्थान, रोपण दूरी, गड्ढे तैयार करना इत्यादि। ➢ किसानों को सलाह दी जाती है कि वे पौधारोपणध्वृक्षारोपण से पूर्व 30ग30ग30 बउ आकार के गड्ढे तैयार कर लें। ➢ ग्रीष्म लहर के दौरान पेड़ों की अनावश्यक छंटाई या प्रत्यारोपण से बचें।

वैज्ञानिक सलाहकार मंडल–

1. डॉ जी. एस. पंवार	6. डॉ मयंक दुबे
2. डॉ दिनेश साह	7. डॉ दिनेश गुप्ता
3. डॉ ए.सी. मिश्रा	8. डॉ पंकज कुमार ओझा
4. डॉ ए.के. श्रीवास्तव	9. डॉ सुभाष चंद्र सिंह
5. डॉ राकेश पाण्डेय	